

ASHA MITAL

SSA

1459

सासप्रीना श्रीगुरु मन्दलाकेन

श्रीप्रा

कीसामा

(२०)

आम बरखरि

1.459

ASHA ARCHIVES

भक्तिकी
॥१॥

श्रीगणेशाय नमः ॥
शुकां वल्लविचारस्तलप
विनापुखकधालनिमभ
हस्ते फलनिकमालितावि
॥ वंदेतां परमेश्वरिभगव

अनमो रत्नव्याय ॥
यामां जज्ञव्यापिनि
यतां जायां धकालापह
वृत्तिपयासनेरिता
निवृद्धिपदासारदा ॥ ॥

॥ ॥
॥ ॥

आशादासदास
1459
ASNA ARCHIVES

कं कि॥

॥१॥

ॐ नमो रत्नत्रयाय॥

॥ ॐ स्वस्ति ॥ ॐ संभर २ विमलसागरमहा

जवहं ॐ संभर २ विमलस्कंधमहावज्रहं ॥ १ ॥ ॐ संभर २ विमलसा

गागूमं वतु वीनसा लकछिप्रमानथं ॥ १ ॥ ॐ संभर २ विमलसा

गरमहावज्रसंभवाय स्वाहा ॥ धाल ७ वीनसा गूधर्मयाना न

जूलसा लकछिप्रमान ॥ २ ॥ ॐ संभर २ विमलस्कंधमहाजवहं ॥ धा

ल ७ वीनसा लकछिनिहि छिंधर्मदानयानागूप्रमानपुन्यदू ॥ ३ ॥

ॐ संभर स्वभरिभिमलसागरमहाजम्भहं फट् ॥ ४ ॥ धाल १ वीना व

र्मदान पूजाया तसाध्वया पुन्यव्याप्यानसद ॥ ४ ॥ ॐ नमो सर्वत

थागतहृदयअनूगते वं कुरुगिनी स्वाहा ॥ ५ ॥ धाल ७ वीना

पुन्यन कछिस्तजर्मसंभाना पापमोचनजयी ॥ ५ ॥ ॐ नमो

कंकि॥
॥२॥

हारत्नचन्द्र आलंकार सर्वज्ञ मित्र तेज प्रभव केतु राजाय तथा गता
या॥ धक बोनाया पून्य न दोल छि धर्म चक्र कीर्ति राजा जूयू॥ ६॥
ॐ नमो चन्द्र मण्डल विस्वधर माने तथा गताय॥ धक बोना सा नना
नं निर्वान पद लायू॥ ७॥ ॐ नमो सर्व धर्म संपूर्ण प्रतिभा सविन
रदिते स्वर तेज संभव प्रभव केतु राजाय तथा गताय॥ धक बोना या पू

न्य न इह जन्म सं परलोक सं निर्वान पद लायू॥ ८॥ ॐ नमो भग
वते अक्षोभ्याय तथा गताय॥ धक बोना या पून्य न अकर्म अकि
र्ति अधर्म सर्व पापना सज्ज्याव अकनिष्ठ धाय॥ श्री बुद्ध क्षत्र सम
नियम सजन्म जूयू॥ ९॥ ॐ नमो श्राके मूलेय तथा गताय॥
धक बोना या पून्य न कोटि सहस्र जर्म सयाना पापना स॥ १०॥

कं किं

॥३॥

ॐ नमो ते जसमंत भवास विजित संशयानि यतथा गताय ॥ ११ ॥
ॐ नमो
धक वो नाया पून्य न चू करिया नाया पाप नास ॥ ११ ॥ ॐ नमो
वजु श्री सासना धिर चिय शासन द्वाह श्र पार मिता सर्व संपूर्ण त
गताय ॥ ॐ ॥ धक वो नाया पून्य न गूलित वृद्ध भाषित दको चो न
थ्य ॥ १२ ॥ ॐ नमो चन्द्र शेन सिंह विजित धर्म पाति विजय ध

रतथा गताय ॥ ॐ ॥ धक वो नाया पून्य न पंच महा पाप श्रुति
दको छेद न जयीत ॥ १३ ॥ ॐ नमो भगवते महारत्न धर्म संपूर्ण त
था गतायाऽहने सम्यक संबुद्धाय ॥ ॐ ॥ धक वो नाया पून्य न
गसा गया पाप मोचन ॥ १४ ॥ ॐ नमो भगवते महारत्न धर्म अग्नि
किरत प्रभव केतु राजाय तथा गताया अहने सम्यक संबुद्धाय ॥

कविः॥

॥४॥

॥६॥ धकवोनायापून्त्यनअसासनसंपतिदयकापापनासः॥

॥१५॥ ॐ नमो भगवते नवनवतिनां बुद्धकोटिनां सम्यक्संबुद्ध
कोटिनां यत्तसहस्राणां गंगानदीवालूकोपमानां तथागतकोटि
नां ॥६॥ धकवोनायापून्त्यन हिंसायानापापनासः ॥ १६ ॥ ॐ
नमो भगवते सहास्रउत्तिष्ठनेत्रतथागतायाऽहंते सम्यक्सं

बुद्धायः ॥६॥ धकवोनायापून्त्यन दुर्गति सवासलायमयः ॥ १७ ॥

ॐ नमो भगवते धर्मसमूह सर्वसंघधर तथागतायाऽहंते सम्यक्सं

बुद्धायः ॥६॥ धकवोनायापून्त्यन गूरुयाको दोहयानापापनासः ॥

॥१८॥ ॐ नमो भगवते आयुकरसंघर तथागतायाऽहंते सम्यक्सं

बुद्धायः ॥६॥ धकवोनायापून्त्यन अचिंतनयव्यसं अन्यतातप

कंदि॥

॥५॥

रगतजूयी॥ १९ ॥ ॐ नमो भगवते एवं सर्वतथागतविहर
इन्द्रकेतुधजश्रीयतथागताया ३ हं नो संम्यक् संवृद्धाय नमो ॥ २० ॥
॥ ॐ आः श्रीशरमा प्रजस्यतात्मकविप्रसायनवज्रधारसूधिकल्पम
समृद्धेनमवागन्तुकलसर्वसिधिप्रयच्छं ॥ २१ ॥ गुरुयाधारनि
॥ २२ ॥ ॐ वज्रकोठमहाश्रीहेरुकं हं फट् ॐ हूल २ हं भ्यो हं फट् ॐ

अक्रांतकयमांतकहनमर्थभक्षहं फट् ॥ ॐ पद्मांतकहनमहाक्रो
धहयशीवहूर २ हं फट् ॥ २२ ॥ ॐ वज्रकिलिकिलायसर्वविप्रस
हं फट् ॥ ॐ गुरुज्ञानश्रीहेरुकगुरुज्ञानकोतिलीस्त्रिस्त्रिममयो
हूल २ हं भ्यो हं फट् ॥ ॐ वज्रबंधसर्वदुःखानहं फट् ॥ ॐ वज्रमहागुरु
वसिष्ठिहं फट् ॥ ॐ ह्रीं पद्मांतककृतवज्रकोधहयगुवहूर

क. वि. ॥
॥ ६ ॥

८ ॥ ६० ॥ कामदेवमण्डलमंत्र ॥ २३ ॥ ॐ सर्वतथागतजीलिवधातु
गिंस्वाहा ॐ तथागतधनुविभूषित अधिस्वाहा ॥ २४ ॥ रगतज
यूव ॥ २४ ॥ ॐ नमो भगवते एवं सर्वतथागतीविहरति स्म इन्द्र
केतुध्वजश्रीयतथागतायाः हन्ते सम्पत्कसंवद्वायनमो ॥ २५ ॥
ॐ आः वीसरनो प्रजस्यात्मकः विप्रसायनवज्रधारसूधिकल्पभ

द्रसमूदेन मवाणनूकलसर्वस्तिधिप्रयच्छहं भ्योहं फट् ॥ ॐ आः को
नकयमांत कहनमर्थभक्षहं फट् ॥ ॐ पयातककृतमहाक्रोधहय
पीवहं रु २ हं फट् ॥ २६ ॥ ॐ वज्रकिलिकिलायसर्वविप्रत्वं हं फट् ॥
ॐ गृह्यज्ञानश्रीहेरुकगृह्यज्ञानजेतिस्वरिस्त्वं ममयोगिनि रु २
हं फट् ॥ ॐ वज्रबंधसर्वदयानहं फट् ॥ ॐ वज्रसर्वदूष्टानहं फट् ॥

कुंकि
॥७॥

ॐ वज्रसर्वद्वयानुकोधहयशीवहूरहंपद ॥ १९ ॥ कामदेवाम
राउहमंत्र ॥ २० ॥ ॐ वज्रमहागुरुसर्वसिद्धिहंपद ॐ हिं पप्पात
वज्रवज्रक्रोतहयशीवहूरहंपद ॥ २१ ॥ कामदेवामराउलमंत्र
॥ २२ ॥ ॐ सर्वतथागतधनुविभूषिते अधिते अधिष्ठिते हंपद
स्वाहा ॥ २३ ॥ ध्वमंत्रकोनायाप्रजोजनआकासकासनगायम

दू ॥ २४ ॥ ॐ अः भगवानेवरोचनहं ॥ ॐ अः अशोभेहं ॥ ॐ आ
त्तसंभवहं ॥ ॐ आः अमृतामहं ॥ ॐ आः अमोघसिद्धिहं ॥ २५ ॥ इ
ति पंचवृद्धवोधिसत्त्वमंत्र ॥ ३० ॥ ॐ आः वृद्धविपश्चीहं ॥ ॐ आ
सिद्धिहं ॥ ॐ आविस्वभूवहं ॥ ॐ आजकलदहं ॥ ॐ आकलकल
हं ॥ ॐ आकास्यपहं ॥ ॐ आश्वाक्यमणिहं ॥ ३१ ॥ इति सप्तवृद्ध

क.क.

॥८॥

म॥३१॥ ॐ आ आर्या वलोकिते सरहं ॐ आ आर्य मे विंयेहं ॐ आ
कासगर्भहं ॐ आ सतभद्रहं ॐ आ वज्रपाणिहं ॐ आ मज्जी
मारभूतेहं ॐ आ सर्वनिबर्णे विस्वामिहं ॐ आ क्षितिगर्भहं ॥
ॐ ॥ इति अष्टोविंशतित्तमः ॥३२॥ ॐ नमो शाक्यमूनयतथा
गताया अहन्ते सम्यकसंबुद्धाय ॥ तत्र ॥ ॐ मूनि २ महाशाक्य

मूनयस्वाहा ॥३३॥ ॐ नमो आदिकेशाक्यमूनी हृदय ॥३३॥ ॐ नमो
भगवते अशोभ्याय तथा गताया अहन्ते सम्यकसंबुद्धाय ॥ तत्र ॥
ॐ कंकनि २ रोचनि २ चोचनि २ संजासनी २ प्रतिहतहन २ संबुद्ध
मयं पणयनी सर्वसत्त्वानां स्वाहा ॥३४॥ धर्मनाथ अशोभ्यता
मधारनी ॥३४॥ ॐ नमो भगवते मेघदूतगुरुदेव्यप्रभुकेतु

ॐ
॥ २३ ॥

यत्तथागताया अहंते संस्पकसंबुद्धाय ॥ तत्र यथा ॥ ॐ भैषय्यं २ महा
षय्यं राजमूनयस्वाहा ॥ २६ ॥ ॐ भैषय्याधारनी ॥ ३५ ॥ ॐ नमो भगवते
अपरमिताय ज्ञानसुविनिचित्रते जो राजाय तथागताया अहंते सं
स्पकसंबुद्धाय ॥ तत्र यथा ॥ ॐ पून्यं २ महापून्यं अपरमितं पून्यं अपरमि
ताय पून्यज्ञानसंभारे पचित्रे ॐ सर्वसंस्कारपरिसंक्षुधर्मगतगगलासमं

गते स्वभावविस्फेमाहानयपरिवारे स्वाहा ॥ २७ ॥ अपरमिता भगवानया ॥
यत्नाम ॥ ३६ ॥ ॐ तत्र यथा ॥ ॐ भैषय्यं २ महाभैषय्यं राजमूनयस्वाहा ॥ २८ ॥ ॐ
भैषय्यं यानामस्मरणा याना व वासली विय तोन सांथली वीने ॥ ३७ ॥ ॐ
निपये ॥ ॐ वागी स्वरी ॥ ॐ वज्रपानि ॥ ॐ अतपं च नीवि ॥ ॐ वाक्यं दं नम ॥
चाउ माहारेय न हं प ॥ ॐ तारे तु तारे स्वाहा ॥ ॐ मारि जिता स्वाहा ॥ ॐ पशते

कंकि
१०॥

पुनसवरी सर्वजलप्रसमने स्वाहा ॥ ३७ ॥ पञ्चअस्त्रिविधमहं फट् ॥ ३८ ॥
वज्रोत्तमा चोपायल्लासतलसां भो लो यजयमदू ॥ ३९ ॥ ॐ मनिधनिद
जीनिमहाप्रतिसेरेरक्षरमां हं हं फट् स्वाहा ॥ ४० ॥ अमृते अमृते च ल २ प्रवर्त
सह हं हं फट् स्वाहा ॥ ४१ ॥ अमृतविलोकिनी गर्भ संरक्षणी आकषणी हं हं फ
ट् स्वाहा ॥ ४२ ॥ विमले विपूले जयवले अमृते हं हं फट् स्वाहा ॥ ४३ ॥ भ २ संभ

र २ इन्द्रियवत्नविस्वधनीरुचो हं हं फट् स्वाहा ॥ ४४ ॥ ध्वनो न सा भूत प्रत
पिशाच अकाल मत्प्रभयमदू ॥ ४५ ॥ ॐ नमो एतन्नयाय ॥ ॐ नमो भगवते
शाके मूनयनथागतायाः हं हं सम्यक् संबुद्धाय ॥ तमथा ॥ ॐ अति ते २
राजिने अजित जय २ मे वि अवलोकिते कर २ महा समया सिद्धि भा २
जो धि न गी विज म्भूर २ ॥ ४६ ॥ अकं स न य वे वि स्वाहा ॥ ४७ ॥ हो मे हि स्वाहा ॥ ४८ ॥

कंदि

११॥

मूनि २ महा मूनि स्यो स्वाहा ॥ ४७ ॥ ॐ श्री विष्णु मूर्ति प्रीति योगेश्वर ॥ ४८ ॥
नाम गुरुता ॥ नमः पतनता वपा नैरा प्रातः अमी ते सज मंग्य मम्ब ॥ ४९ ॥
ॐ नमो मंग्य ॥ नमः ॥ श्री य स्वाहा ॥ ५० ॥ ॐ कंद दत्त यात सा छेत्त
॥ सा सोल छिदाना प्रमान ॥ ४९ ॥ ॐ नमो भगवते रत्न केतु राजाय तथा
गताया अहंते सम्यक मंग्य यात मथा ॥ ५० ॥ ॐ २ महा रत्न रत्न विजय स्वा

हा ॥ ॐ नमो दस दिक्काल सर्व रत्न वया य ॥ ५१ ॥ ॐ दर्प दशे सर्व पापी वस्व धीनि य
स्वाहा ॥ ५२ ॥ ॐ श्री विष्णु मूर्ति प्रीति योगेश्वर ॥ ५३ ॥ ॐ विष्णु
गर्भ मनि प्रभे तथा गती निर्दसन मीने २ स प्रभ विं मत्त मार्ग रगि मीरे ॥ ५४ ॥
ॐ श्री विष्णु मूर्ति प्रीति योगेश्वर ॥ ५५ ॥ ॐ श्री विष्णु मूर्ति प्रीति योगेश्वर ॥ ५६ ॥
ॐ श्री विष्णु मूर्ति प्रीति योगेश्वर ॥ ५७ ॥ ॐ श्री विष्णु मूर्ति प्रीति योगेश्वर ॥ ५८ ॥
ॐ श्री विष्णु मूर्ति प्रीति योगेश्वर ॥ ५९ ॥ ॐ श्री विष्णु मूर्ति प्रीति योगेश्वर ॥ ६० ॥

कंकि

१२॥

॥ ४४ ॥ ॐ पवनहं ॥ ॥ सर्वोत्तमोऽयं नमो भगवते ॥ ॥
नमो भगवते प्रसापारमिताये ॥ ॐ नददति ईरि शिमीरिशि रभिनय
नमो भगवते प्रदत्तलप्रति ईरिति रमिलिति २ अरिति २ उत्तलित २ वयस्वाहा
॥ ॥ ध्यात्वा वीनसा नवस्तकोटि वज्र छव प्रसापारमिता वीनाया पूज्य
॥ ॥ ४५ ॥ ॐ अविधिरहं खचल ॥ ॥ अथ अक्षरमंजूरी यादव

च वीनाय थव स्या के अभिषेक जल सां दिक्षाद सां थव सभाल प
मितमद्माने त्रयोदश भूवन सचोडे इन्द्र देव ब्रह्मा भाल पाव धमत्र
वीनाय गीत जल सध्यान पूय इन्द्र जव व्यन स की पतंग नू या वी
पनि त्रयोदश भूवन मज्जका जूयुव कथा रन्यस पंच पाप छेदन मदी
प्रत्येक रूप पायक इन्द्र ॥ १ ॥ ॐ श्री ॥ ॥ चमज्जुआ या एक वर

कृतिः

॥३॥

रुक्मिणीनसासर्वपापअज्ञानकर्म॥३॥ ४६॥ ॐ ह्रीं शृंगे शिवशुद्धम
निरीवित्तवस्तुदरं अअभावं विरसि २ स्वाहा ॥ ४७॥ चबोनायापुन्यना
॥ ४८॥ मयूर ॥ ४९॥ मयूर ॥ ५०॥ मयूर ॥ ५१॥ मयूर ॥ ५२॥ मयूर ॥ ५३॥ मयूर ॥ ५४॥ मयूर ॥ ५५॥ मयूर ॥ ५६॥ मयूर ॥ ५७॥ मयूर ॥ ५८॥ मयूर ॥ ५९॥ मयूर ॥ ६०॥ मयूर ॥ ६१॥ मयूर ॥ ६२॥ मयूर ॥ ६३॥ मयूर ॥ ६४॥ मयूर ॥ ६५॥ मयूर ॥ ६६॥ मयूर ॥ ६७॥ मयूर ॥ ६८॥ मयूर ॥ ६९॥ मयूर ॥ ७०॥ मयूर ॥ ७१॥ मयूर ॥ ७२॥ मयूर ॥ ७३॥ मयूर ॥ ७४॥ मयूर ॥ ७५॥ मयूर ॥ ७६॥ मयूर ॥ ७७॥ मयूर ॥ ७८॥ मयूर ॥ ७९॥ मयूर ॥ ८०॥ मयूर ॥ ८१॥ मयूर ॥ ८२॥ मयूर ॥ ८३॥ मयूर ॥ ८४॥ मयूर ॥ ८५॥ मयूर ॥ ८६॥ मयूर ॥ ८७॥ मयूर ॥ ८८॥ मयूर ॥ ८९॥ मयूर ॥ ९०॥ मयूर ॥ ९१॥ मयूर ॥ ९२॥ मयूर ॥ ९३॥ मयूर ॥ ९४॥ मयूर ॥ ९५॥ मयूर ॥ ९६॥ मयूर ॥ ९७॥ मयूर ॥ ९८॥ मयूर ॥ ९९॥ मयूर ॥ १००॥ मयूर ॥

जुमीपु॥ ५०॥ ॐ श्रीतातपवे अपरिज्ञिते सर्वग्रहानां त्रामदहन २
फट् स्वाहा ॥ ५१॥ मयूर ॥ ५२॥ मयूर ॥ ५३॥ मयूर ॥ ५४॥ मयूर ॥ ५५॥ मयूर ॥ ५६॥ मयूर ॥ ५७॥ मयूर ॥ ५८॥ मयूर ॥ ५९॥ मयूर ॥ ६०॥ मयूर ॥ ६१॥ मयूर ॥ ६२॥ मयूर ॥ ६३॥ मयूर ॥ ६४॥ मयूर ॥ ६५॥ मयूर ॥ ६६॥ मयूर ॥ ६७॥ मयूर ॥ ६८॥ मयूर ॥ ६९॥ मयूर ॥ ७०॥ मयूर ॥ ७१॥ मयूर ॥ ७२॥ मयूर ॥ ७३॥ मयूर ॥ ७४॥ मयूर ॥ ७५॥ मयूर ॥ ७६॥ मयूर ॥ ७७॥ मयूर ॥ ७८॥ मयूर ॥ ७९॥ मयूर ॥ ८०॥ मयूर ॥ ८१॥ मयूर ॥ ८२॥ मयूर ॥ ८३॥ मयूर ॥ ८४॥ मयूर ॥ ८५॥ मयूर ॥ ८६॥ मयूर ॥ ८७॥ मयूर ॥ ८८॥ मयूर ॥ ८९॥ मयूर ॥ ९०॥ मयूर ॥ ९१॥ मयूर ॥ ९२॥ मयूर ॥ ९३॥ मयूर ॥ ९४॥ मयूर ॥ ९५॥ मयूर ॥ ९६॥ मयूर ॥ ९७॥ मयूर ॥ ९८॥ मयूर ॥ ९९॥ मयूर ॥ १००॥ मयूर ॥

क. कि.
१६॥

वित ॐ संभरहं ॥ ५४ ॥ महापवनवासपुष्पासंयतव ॥ ५५ ॥ ॐ न
मो वज्रसारे प्रमथते तथा गताया अहं ते संम्यक् सन्नुदाय ॥ तमया ॥
वज्रे २ महावज्रे महानेज महाविजया वज्रे सर्वकर्मा महाबोधिचिन्त
वज्रे महाबोधि मण्डपक समक्रमज्ज सर्वकर्मा वर्तविस्वधने वज्रे स्था
हा ॥ ५६ ॥ प्रतिबोला व पूजा या तसा व्याख्या तम ॥ ५५ ॥ ॐ नमो स

मंत वृक्षानां असमं धर्मधातु कार्यगतिगतानां सर्वथा ॥ आस अं अं
सं सः हं हं रं रं वं वं स्वां स्वां रं स्वां ॥ हं हं स्वां ॥ ५७ ॥ आवकां वं रं वं न वार
नि ॥ ५८ ॥ ॐ नमः सर्वतथागत महाजोगे स्वरहं ॥ ५९ ॥ अनंतर महाव
ज्रजागना महदय ॥ ५० ॥ ॐ नमो भगवते सर्वदुर्गति परिहो वने सर्व
पविस्वधने शुद्धि विस्वदे सर्वकर्मा वर्तविस्वधने स्था ॥ ५१ ॥ सनदी न

क.क.
॥५॥

सर्वआवर्तविस्वर्धनेहं हनहं कदा ॥ पंचावेसांत ॥ ५॥
नधारिनि ॥ ५५ ॥ ॐ अआसर्वतथागतहृदय ॥ २ ॥ वेहं हीः भगवा
तानमूर्तिनागिस्वामहावाच सर्वतथागतहृदय ॥ २ ॥ वेहं हीः
वान्तानमूर्तिवागीस्वामहावाच सर्वधर्मागगनामल सपरि
द्वधर्मवातुतानगर्भआ ॥ ॥ तत्र अक्षरोगनामसंगितिव्याकन

उत्तमधारिनी ॥ ५५ ॥ ॐ वज्रसत्त्वसमयनत्पालय ॐ वज्रसत्त्वनेत्रपानि
स्थोदृष्टोमेभव सतप्योमेभव सपय्योमेभव अनूकमेभव सर्वसिद्धि
प्रयच्छ सर्वकर्मसुखमिंचित् थियंकुहं हं हं हं हं हं भगवन् सर्वतथागत
जुमानेमुचवजीभवमहासमयसत्त्वआ ॥ ॥ सताक्षर ॥ ५० ॥ ॐ
महामूर्तिनयस्वाहा ॥ ॐ मनिपयेहा ॥ चकारेगनहं ॥ ॐ तामुता

किं॥

॥३॥

सति कावजं भैरव हृदय ॥ ६५ ॥ ॐ श्री वज्र हेरु क हं फट् ॥ डा कि नि न
ल संवलं स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं हे हे हं फट् ॥ ॐ वज्र वे लो च नी ये हं हं फट् ॥ ॐ सर्व
वृद्ध डा कि नि ये हं हं फट् ॥ ॐ सर्व वृद्ध डा कि नी य वज्र व न नी य वज्र वे लो
च नी ये हं हं फट् ॥ २ स्वाहा ॥ ॐ चक्र सम्वल वज्र वरुणि नी य हृदय अ
काल मूष चारि नि ॥ ६६ ॥ ॐ आः हं ह्रीः ॐ म नि प ये हं ॥ ॐ वज्र वा रा हि

वृद्ध डा कि नि य वज्र वे लो च नि य हं य हं फट् ॥ ॐ ॥ महा कारो वज्र वा
रा हि हृदय ॥ ६७ ॥ ॐ ए म य घ य न म स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं वि नि स व ह्रीं य हं ज
॥ ॐ ॥ ॐ गी ने य हृदय ॥ ६८ ॥ ॐ आः हं हो स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं हं हं ह्रीं ह्रीं
स्वाहा ॥ ॐ का ल चक्रा य हं हं फट् ॥ ॐ दे वि स मा ता हं फट् ॥ ॐ ॥ ॐ
ॐ वज्र वा रा हि आ व स र्व हृदय न ह्रीं स्वाहा ॥ ॐ ॥ ॐ दे वि पि च व

कैलिः

॥१॥

फट् स्वाहा ॥ ॐ वज्रकर्तिरिहिवज्रायहं ३ फट् स्वाहा ॥ ॐ आहं फट् स्वाहा ॥
॥२॥ ॐ वरधारय २ मर्ह २ वंधकहं फट् स्वाहा ॥ ॐ मास्व न पयसा
न एहे हि जिनीजिकहं फट् स्वाहा ॥ ॐ वज्रसूर्यतमा विधमनमंतमय
स्त्वहं आलोकिकहं फट् स्वाहा ॥ ॐ हरहि २ प्रताधिकहं फट् स्वाहा ॥ ॐ हं
स्वाहा ॥ ॐ आशीं स्वाहा ॥ ॐ दृडडाकिनी आशीं हं फट् ॥ ॐ ॥ भगवान्

यामहं मायाधारिणी ॥ ७२ ॥ ॐ श्रीं ४ छिंदिकृतानरायहं फट् २ स्वाहा ॥
॥ जर्मराजायाहृदय अहसशम ॥ ७३ ॥ ॐ प्रसोन्नदत्तसोन्नदः प्रसोदाले
गोलछादखजकसचवदहं फट् स्वाहा ॥ ७४ ॥ ॐ मंजूश्रीयाकिरनभार
त्तामंत्र ॥ ७५ ॥ ॐ गारवजिगविमेनासदं च महाक्रोदहं फट् ॥ ७६ ॥ ॐ हरी
॥ ७७ ॥ ॐ अकसमचरसदचसमरयहं फट् ॥ ७८ ॥ ॐ सिंधुमाय

कंकि

२५॥

विनामज्ञातदिति मंत्रः ॥ ७६ ॥ ॐ आहं छिन्नरुद्रशिखकचोदिसद
वदफलभयनेददगसर्वमारयेहं फट् ॥ ७७ ॥ महारक्तभावमंत्रः ॥ ७८ ॥
ॐ प्रहं २ ॐ वज्रपातिहयग्वकरनहं फट् ॥ ७९ ॥ श्रीतिमंत्रद्योतसावर्त
विरचसमलजलजंतुमहारजूयाय्यापतिभयमद ॥ ८० ॥ ॐ ज्ञानज
किनिअमप्रतिनीदंनियस्वाहा ॥ ८१ ॥ त्पोरशाभपोरंगाधः ॥ ८२ ॥ खर

कंमोरकंथभ्याः रुद्र २ ह ॐ महारक्षचहं फट् ॥ ८३ ॥ वज्रमहाकालसं
विद्यानविनायकानां हं फट् स्वाहा ॥ ८४ ॥ कालरूपं यहं फट् ॥ ८५ ॥ चाम
रिडयहं फट् ॥ ८६ ॥ श्रीमहाकालायेहं फट् ॥ ८७ ॥ महाकालरीत्रियहं फ
ट् ॥ ८८ ॥ ॐ गोविनेचण्डालिगणेशीगणेशीदेविहं भ्योह ॥ ८९ ॥ पूनअन
परुषोहितसर्वसर्वमारयेहं फट् ॥ ९० ॥ सनमीचित्रज्वलप्रतिदी

स्वाहा ॥ ६० ॥ श्रीतिवोनसारसाभगवतीवोनाथ्यं ॥ ६१ ॥ ॐ नमो भगवते
पंचविंशतिका प्रज्ञा पारमिताये ॥ तत्र ॥ प्रज्ञा २ महा प्रज्ञा सर्वभू
ज्ञा पासवज्ञानदूरे प्रज्ञाते ॥ सकलेसिक्कसिः ३ धृ २ कम्भ २ भूधृ २ सा
२ धर २ पर २ गर्ज २ गर्जति २ फ ३ ० स्वाहा ॥ ६२ ॥ ॐ नमो भगवते सर्वतथागतहृदयअनूगते ॥
तिकावोनाउत्ति ॥ ६२ ॥ ॐ नमो भगवते सर्वतथागतहृदयअनूगते ॥

ॐ कुरुगिनि स्वाहा ॥ ६३ ॥ ॐ नमो भगवते मंजुश्रीय ॥ तत्र ॥ गते २
पारंगते पारसंगते वेधिय स्वाहा ॥ ६४ ॥ ॐ नमो भगवते एकसार
ज्ञा पारमिताय ॥ ६५ ॥ ॐ नमो भगवते समंतभद्राय वेधिसत्वा
य महासत्वाय महाकारुनिकाय ॥ तत्र ॥ भभरसत्वाय स्वाहा
॥ ६६ ॥ ॐ नमो भगवते सर्वपापनाश ॥ ६७ ॥ ॐ नमो भगवते

किके
१२॥

नेमहारत्नअग्निनेजप्रभकेतुरजायतथागतायाःहेनेसंम्यकसंव
द्वाय॥१॥हिंसायानापापनास॥७॥ॐ नमो भगवतेमहारत्नअग्नि
वरपूष्यकेतुरजायतथागतायाःहेनेसंम्यकसंवद्वाय॥१॥अ
र्तियानापापनास॥८॥ॐ नमो भगवतेचन्द्रसरनायप्रजस्यात्म
कधर्मपानिजयाभूषिततथागतायाःहेनेसंम्यकसंवद्वाय॥१॥

ध्वोनामापामपूकपापनास॥९॥ॐ नमो भगवतेप्रहसितवज्रिधिरप्र
हसतीविंसीतिथसहस्रपारिमितायतथागतायाःहेनेसंम्यकसंवद्वाय
॥१॥कामकूटयादतोपापनास॥१०॥ॐ नमो भगवतेनवनवतिनास
म्यकसंवद्वाकोटितादसगंगानदिवालूकोप्रमानातथागतकोटिता॥११॥
बुधभाषितवोनावृत्ति॥१२॥ॐ नमो भगवतेप्रहसितवज्रसंनततथाग

क. वि.

२३॥

नायाऽहने सम्यक् संवृद्धाय ॥ २३ ॥ वनजसलवकाया सर्वमेतोलना
यान्तागतं मसि स्य हिं वगू मा मववायाती पः विवागू वा सं चो मय
निवासं धनागू आ वल सुनागू प्रतिपाप अकर्म अधर्म या नागू कल्प म
इतथागतं न सृष्टिं स्वस्थि विज्या तसां थव पाप पुन के मी जे वध के हने
गू क छ पाप लूमन का व थ्व धार निहृ दय एक चित्त या ना व घन गू घा च

स मि गूलि जू वगू वेल सदा दून क या व भ स्म जूल थ्व थ्यं द सां दू सल पाप
काय वा क चित्त या ना व काय वा क चित्त संपूर्ण मो च या थ व का व उपर
गा चली विज्या क स महागू रं पर मे स्वर न की ले संध मे च ऊ प्रवर्तना या थ
ध का व ग प्र या स्य त या ॥ २४ ॥ थू गू पू छ क मं गू थी समृ द्ध ना म ध मे स्था म
थ्री सा व धी भ स्त न भक्ति भा व न पि का स्यं त ल ॥ २५ ॥ अ न मो भ ग व गे दो
वन प्र भ के तु ए जा य त था ग ता याऽह ने सं स्य क सं वृ द्धाय ॥ अ न मो भ ग व

आर्य समाज

1.459

ASMA ARCHIVES



ADNA Archives

34 N 4E

1.459

ADNA Archives